DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
कहानी और कहानीकार
LIVE
08-07-2024 09:00 AM
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR With ANKIT

कहानी की व्युत्पति एवं अर्थ

'कहानी' शब्द की व्युत्पत्ति 'कहनानी' शब्द से हुई हैं। 'कहानी' या 'कथा' का शाब्दिक अर्थ होता है— कहना। किसी विशेष घटना को रोचक ढंग से किये वर्णन को 'कहानी' कहते हैं। कहानी कहने सुनने की प्रवृत्ति बहुत पुरानी हैं।

साहित्य में गद्य साहित्य के एक अन्यतम भेद के रूप में कहानी लोकप्रिय साहित्य का रूप हैं। साहित्य में कहानी कहने की प्रवृत्ति उतनी ही पुरानी है जितनी कि मनुष्य-सभ्यता । जितने विकास, जितने परिवर्तन मानवी सभ्यता में आते गये हैं, उतने ही विकास तथा परिवर्तन कहानी साहित्य में भी दिखाई देते हैं।

डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार - "आख्यायिका एवं निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को ध्यान में रखकर लिखा गया आख्यान है । "

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार - "कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव के प्रभावित करना ही लेखक को उद्देश्य रहता है।"

अज्ञेय के अनुसार - " कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है जो जीवनभर मिलती रहती है और समाप्त नहीं होती"

जैनेन्द्र कुमार के अनुसार - "कहानी तो एक भूख है, जो निरंतर समाधान पाने की कोशिश में रहती हैं। "

गुलाबराय के अनुसार - " कहानी की परिभाषा देना उतना ही कठिन है, जितना बिहारी की नायिका की तस्वीर खींचना, जो चतुर चितेरों को भी क्रूर बना देती है ।

मोहन राकेश के अनुसार - "कहानी का प्रत्यक्ष कैनवास बहुत छोटा और साधारण हो सकता है, पर जिस परोक्ष की ओर उसका संकेत होता हैं, वह छोटा साधारण नहीं होता।"

निष्कर्ष यह है कि कहानी का रूप विषयों के अनुसार निरंतर बदलता रहता हैं। उसे परिभाषा से बाँधना सम्भव नहीं हैं।

कहानी के तत्त्व

कहानी के मुख्यतः छः तत्त्व होते हैं-

(i) कथानक

(ii) पात्र और चरित्र चित्रण

(iii) संवाद योजना

(iv) देशकाल और वातावरण

(v) भाषा शैली

(vi) उद्देश्य

हिन्दी की प्रथम कहानी और प्रणेता

प्रणेता	कहानी	वर्ष	लेखक
रामचन्द्र शुक्ल	इंदुमती	1900	किशोरीलाल गोस्वामी
डॉ. बच्चन सिंह	प्रणयिनि	1887	किशोरीलाल गोस्वामी
देवी प्रसाद सिंह	एक टोकरी भर मिट्टी	1901	माधवराव सप्रे
डॉ लक्ष्मीनारायण लाल	ग्यारह वर्ष का समय	1903	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
डॉ नगेन्द्र	सौत		प्रेमचन्द
गणपति चन्द्र गुप्त	पंच परमेश्वर	1903	प्रेमचंद

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार - इंदुमती किसी बंग्ला कहानी की छाया नहीं हैं तो हिन्दी की यही मौलिक कहानी ठहरती हैं। इसके उपरांत 'ग्यारह वर्ष का समय' फिर दुलाईवाली का नम्बर आता है

प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी कहानी

इस युग में कहानियों को जीवन की नयी समस्याओं से जोड़ने का प्रयास सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने ही किया। इस काल के कहानीकारों ने महात्मा गाँधी के प्रभाव से प्रभावित होकर सत्य, अहिंसा, मानव प्रेम, स्वदेश प्रेम आदि भावों को अपनी कहानी का विषय बनाकर युगीन परिवेश को उजागर किया। प्रेमचन्द इस युग के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार थे । आधुनिक कहानी का पादुर्भाव प्रेमचन्द युग में ही हुआ।

प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी। उनकी प्रथम कहानी 'पंच परमेश्वर' से लेकर अन्तिम कहानी 'कफन' तक का सफर सुहाना है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी के क्षेत्र में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परम्परा का सूत्रपात किया ।

प्रेमचन्द की ही परम्परा को आगे बढ़ाने वाले चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' चतुरसेन शास्त्री, सुदर्शन आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचन्द का मूल नाम नबावराय था। उर्दू में वे इसी नाम से लिखते थे।

प्रेमचन्द के प्रमुख कहानी संग्रह

सप्त सरोज (1917)
प्रेम पूर्णिमा (1918)
प्रेम प्रसून (1924)
प्रेम प्रतिमा (1926)
प्रेम चतुर्थी (1929)
सप्त सुमन (1930)

नवनिधि (1917)
प्रेम पच्चीसी (1923)
प्रेम द्वादश (1926)
प्रेम प्रतिज्ञा (1929)
प्रेम कुंज (1930)
कफन (1936)

प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं जो 'मानसरोवर' शीर्षक से आठ भागों में प्रकाशित हैं।

प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियाँ

नमक का दरोगा (1913)
सज्जनता का दंड (1916)
दुर्गा का मन्दिर (1917)
शांति (1921)
गृह दाह (1922)
सवा सेर गेहूँ (1924)
मुक्तिमार्ग (1924)
पूस की रात (1930)
पत्नी से पति (1930)
दो बैलों की कथा (1931)

इस्तीफा (1928)
ईश्वरीय न्याय (1917)
बूढ़ी काकी (1920)
हार की जीत (1922)
परीक्षा (1923)
शतरंज के खिलाड़ी (1924)
अलग्योझा (1929)
समर यात्रा (1930)
सद्गति (1930)
होली का उपहार (1931)

तावान (1931)
बेटों वाली विधवा (1932)
नशा (1934)
सौभाग्य के कोड़े (1924)
दो सखियाँ (1928)
ठाकुर का कुआँ (1932)
ईदगाह (1933)
मुक्तिधन (1924)
बड़े भाई साहब (1934)
कफन (1936)

जयशंकर प्रसाद

प्रेमचन्द के समान ही कहानी क्षेत्र में एक-दूसरी भाषा शैली और शिल्प को लेकर कहानी लिखने वाले कहानीकार हैं, जयशंकर प्रसाद की कहानियों में भावुकता और कल्पना का प्रखर अंग हैं। मूलतः छायावादी कवि और नाटककार होने के कारण प्रसादजी की कहानियों में काव्यमयता और नाटकीयता के तत्त्व भी पाए जाते हैं। प्रसाद जी ने कुल 69 कहानियाँ लिखीं, जो पाँच संग्रहों छाया (1914), प्रतिध्वनि (1926), आकाशदीप (1928), आँधी (1931) इन्द्रजाल (1936) जैसे कहानी संग्रह में प्रकाशित हैं।

प्रमुख कहानियाँ

ग्राम (1911), आग, चन्दा, गुलाम, चित्तौर- उद्धार, गुंडा, पत्थर की पुकार, करूणा की विजय, उस पार का योगी, खंडहर की लिपि, प्रतिमा, पाप की पराजय, दुखिया, शरणागत, बिसाती संदेह, मधुवा, पुरस्कार, चित्रमन्दिर, देवरथ, सालवती, सुनहरा साँप, देवदासी, ममता, घीसू, चूड़ीवाली, नूरी, गुण्डा ।

- 'जयशंकर प्रसाद' की प्रथम कहानी 'ग्राम' वर्ष 1911 में 'इंदु' में प्रकाशित हुई थी।
- 'छाया' प्रसाद की प्रथम कहानी संग्रह होने के साथ ही हिन्दी का भी प्रथम कहानी-संग्रह हैं।
- प्रसाद जी की 'ग्राम', 'तानसेन', 'रसिया बालम' कहानियों पर बांग्ला कहानी शैली का प्रभाव है।
- प्रसाद जी की 'गुण्डा' कहानी में भारत के ईस्ट इंडिया कम्पनी के युग का चित्रण हुआ है।

- जयशंकर प्रसाद की 'अधूलिका' लोकमंगल की भावना से मंडित राष्ट्र और विश्व कल्याण के लिए वैयक्तिक प्रेम को न्योछावर करने वाली कहानी है।

'संदेश' कहानी में दाम्पत्य प्रेम का उज्ज्वल रूप प्रस्तुत किया है।

प्रसाद जी की 'बनजारा' कहानी में पुलिसिया अत्याचार की अभिव्यक्ति के साथ यह भी स्पष्ट किया गया है कि जीवन में पैसे को खाया नहीं जा सकता, किन्तु पैंसों से खाद्य पदार्थों की पूर्ति की जा सकती हैं।

प्रसादजी ने 'देवरथ' कहानी में बौद्ध धर्म और उसके विकृत वज्रयानी रूप का यथार्थ चित्रण किया है।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने मात्र तीन कहानियाँ लिखकर यश प्राप्त किया। इनकी तीनों कहानियाँ सामाजिक हैं जिनकी मुख्य संवेदना प्रेम और कर्तव्य के उज्ज्वल रूप का चित्रण है।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने तीन कहानियाँ लिखी हैं।

सुखमय जीवन (1911)

बुद्ध का काँटा (1914)

उसने कहा था (1915)

- चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' वर्ष 1915 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी में पहली बार फ्लैश बैक शैली का प्रयोग हुआ हैं । यह कहानी प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई प्रेम-संवेदना की कहानी हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'उसने कहा था' कहानी की प्रशंसा करते हुए लिखा हैं, “घटना इसकी ऐसी है जैसे बराबर हुआ करती है, पर उसमें से भीतर से प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा हैं केवल झाँक रहा हैं निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं रहा है। कहानी भर में कहीं प्रेम की निर्लज्जता, प्रागल्भता, वेदना की वीभत्स विवृत्ति नहीं हैं। सुरूचि के सुकुमार से सुकुमार स्वरूप पर कहीं आघात नहीं पहुँचता । इसकी घटनाएँ ही बोल रही हैं। पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं। "

चतुरता | प्रतिभा

विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

- प्रेमचन्द की परम्परा के कहानीकारों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' भी आते हैं। हिन्दी में उनकी प्रथम कहानी 'रक्षाबंधन' है।

उनकी लगभग 300 कहानियाँ उपलब्ध हैं।

- प्रमुख कहानी-संग्रह - गल्प मन्दिर (1919), चित्रशाला भाग -1 (1924), चित्रशाला भाग-2 (1929), कल्लोल (1933), प्रेम प्रतिमा, मणिमाला |

- इनमें रक्षाबंधन, ताई उद्धार, माता का हृदय, विधवा पावन पतित, साहित्य सेवा आदि श्रेष्ठ कहानियाँ हैं, जो सामाजिक समस्याओं से सम्बद्ध हैं।

- विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की प्रथम कहानी रक्षाबन्धन हैं।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

प्रेमचन्द के समय के कथाकारों में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का नाम उल्लेखनीय हैं उनके बारे में शिवकुमार शर्मा का मत हैं "बेचन शर्मा उग्र" हिन्दी कहानी के एक विद्रोही कलाकार हैं उनका यह विद्रोह पूँजीवादी सामंती व्यवस्था के प्रति अपने प्रचंड रूप में व्यक्त हैं। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक विचारों, रूढ़ियों, अन्ध विश्वासों और मिथ्या परम्पराओं पर खुलकर प्रहार किया हैं। उन्होंने अभिजात्य वर्गीय पोथी आदर्श वादिता के तीनों पदों को छिन्न-भिन्न करते हुए सामाजिक कुरीतियों तथा भ्रष्टाचारों का यथार्थ वर्णन किया हैं अतः हिन्दी के बहुत आलोचकों ने इन्हें उल्कापात, घूमकेतु तूफान एवं बवंडर की उपमा दी हैं । '

उग्र जी की प्रमुख कहानी संग्रह : चाकलेट (1924), शैतान मण्डली (1924), चिनगारियाँ (1925), इन्द्रधनुष (1927), घोड़े की कहानी, बलात्कार (1927), निर्लज्जा (1929), दोजख की आग (1929), उग्र का रहस्य (1939), गल्पांजलि, रेशमी (1942), पंजाब की महारानी (1943), जब सारा आलम सोता हैं (1951) आदि हैं।

- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'उसकी माँ' कहानी के आधार पर नन्ददुलारे बाजपेयी ने 'उग्र' को हिन्दी का पहला राजनीतिक कहानीकार माना हैं।
- 'बनारसी दास चतुर्वेदी' ने बेचन शर्मा उग्र' की रचनाओं को घासलेटी साहित्य कहकर प्रबल विरोध किया।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

- पदुमलाल, पुन्नालाल बख्शी कथानक प्रधान कहानियाँ लिखने में सिद्धस्त माने गए हैं। इनके द्वारा लिखित प्रमुख कहानी संग्रह है। झलमला -1934, कनक रेखा आदि ।

प्रेमचन्द युग के अन्य महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं कहानियाँ

कहानीकार	कहानी
रायकृष्ण दास	अनाख्या (1929), सुधांशु (1929), आँखों की थाह तथा अन्य कहानियाँ (1941)
शिवपूजन सहाय	महिला महत्त्व (1922), कहानी का प्लॉट (1928)
चंडीप्रसाद हृदयेश	नंदन निकुंज (1923), वनमाला
भगवती प्रसाद वाजपेयी	मधुपर्कें (1929), दीपमालिका (1930) पुष्करिणी (1936), हिलोर (1938), खाली बोतल, मेरे सपने, ज्वार भाटा (1940), कला की दृष्टि (1942), उपहार (1942), अंगारें (1944), उतार उतार चढ़ाव (1950)

विनोद शंकर व्यास	नवपल्लव (1928), तूलिका (1928), भूली बात (1929), मणिदीप (1945), नक्षत्र लोक (1950)
जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'	किसलय (1929), मालिका (1930), मृदुदल (1932), मधुमयी (1937)
चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	चन्द्रकला (1929)
भगवती चरण वर्मा	दो बाँके (1936), इंस्टालमेंट, मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, मोर्चाबन्दी, सौदा हाथ से निकल गया, संकट, समझौता, गनेसीलाल का रामराज, प्रायश्चित, वो दुनिया।
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	लिली (1934), सखी (1935), सुकुल की बीबी (1941), चतुरी चमार (सखी)

जैनेन्द्र कुमार

मनोविश्लेषण प्रधान कहानी को विकसित करने का श्रेय जैनेन्द्र को मिलता है। इनकी कहानियों में दार्शनिक पुट मिलता हैं। इनकी लगभग कहानियाँ मनोविश्लेषण प्रधान हैं। डॉ. लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय ने लिखा हैं वे दार्शनिक और विचारक कहानी लेखक के रूप में हमारे सामने आते हैं। "

जैनेन्द्र की कहानियों के माध्यम से पहली बार हिन्दी साहित्य में 'व्यक्ति' को महत्त्व मिला। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने जैनेन्द्र को मानव-जीवन दर्शन का सबसे बड़ा कहानीकार माना हैं।

उनकी कहानियों में व्यक्तिगत चरित्र, व्यक्तिगत जीवन दर्शन तथा व्यक्तिगत मनोविज्ञान का प्रकाश होता है और वे सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अभिव्यक्तियों के निरूपण के प्रति आग्रहशील रहते हैं। जैनेन्द्र जी की कहानियों में कथानक लघु और कभी-कभी तो

नहीं के बराबर होता है। अनेक छोटी छोटी घटनाएँ मिलकर एकजुट होती है और वे एक कथारूप के विद्यमान में सहयोग प्रदान करती है।

जैनेन्द्र जी के महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह और कहानियाँ निम्नलिखित हैं—

- **कहानी संग्रह** — फाँसी (1929), वातायन (1931), दो चिड़िया (1934), एक रात (1935), नीलम देश की राजकन्या (1938), ध्रुवयात्रा (1944), पाजेब (1948), जयसंधि (1948)।
- **चर्चित कहानियाँ** – स्पर्द्धा, पत्नी, एक कैदी, गदर के बाद, बाहुबली, तत्सत्, लाल सरोवर, मास्टर जी, जाहनवी तथा अपना-अपना भाग्य आदि ।
- जैनेन्द्र की प्रथम कहानी 'खेल (1928)' 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई, किन्तु जैनेन्द्र ने 'फोटोग्राफी' को अपनी प्रथम कहानी माना हैं।
- जैनेन्द्र की 'फाँसी' क्रांतिकारी, 'शमशेर' और पुलिस अधिकारी की बेटी 'जुलैका' की प्रेम कहानी है ।

- जैनेन्द्र की 'दो चिड़ियाँ' मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर व्यक्त मन की शंकाओं और समस्याओं का विश्लेषण करती हुई कहानी हैं।
- जैनेन्द्र कृत 'स्पर्द्धा' इटली की पृष्ठभूमि पर विदेशी पात्रों को केन्द्र में रखकर लिखी गई हैं।

इलाचन्द्र जोशी

इलाचन्द्र जोशी ने अपनी कहानियों में रोमांस की भूमिका में सूक्ष्म मानसिक द्वन्द्व का चित्रण किया हैं। उनकी कहानियाँ मार्मिक और हृदयस्पर्शी हैं।

इलाचन्द्र जोशी मनोविश्लेषणवादी कथाकार हैं, इनकी कहानियों में दमित कामवासना, तज्जनित मानसिक विकृति एवं अंततः दक्षित काम-ग्रंथि के आधार को स्पष्ट करते हुए व्यक्ति के मानसिक उन्नयन पर बल दिया गया है।

प्रमुख कहानी संग्रह

धूप रेखा (1938), दीवाली और होली (1942), रोमैंटिक छाया (1943), आहुति (1945), खण्डहर की आत्माएँ (1948), डायरी के नीरस पृष्ठ (1951), कंटीले फूलः लजीले काँटे (1957)

प्रमुख कहानियाँ – चरणों की दासी, परिव्यक्ता अनाश्रित, होली, रोगी मरीज आदि ।